

ASHA ARCHIVES

1.437

SHAW-WALKER

ASHA ARCHIVES

१ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ श्रीसूर्याय ॥ विवाहाः वंधुसिंदुरा रोहताः विधानलिख्यते ॥ ॥ धकाडिजज
मात नोसिचकावः चेतनतिके स्वानंदुके धुं च्यायः ॥ श्रीसूर्यार्घ्याचके वाक्यः ॥ ॥ ॐ अद्यादियजसा
तस्यः वंधुसिंदुरा रोहता कलसा चेतनः निमित्त्यथ कर्तुः श्रीसूर्याय अर्घनमः पुष्यनमः धूपनमः ॥ ॐ नमः
महाशुंकारे मृगताताः जतांता जतरस्मिभिः कृतमुद्धरनयनः तनोमितीव भास्करेभ्यः पुष्यनमः ॥ ज
जमाननं ताहायः पुजा भलाधियकं तयः ॥ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ शुद्धं ॥ शा क्त शिव ॥ प्रसाद परम ॥
सर्वज्ञ शक्ति श्वरः सानन्द ॥ शूरनायक ॥ सह भगवान् संपूर्ण काम प्रद ॥ वागीश्वर दत्तुं वाक् भव
प्रदो वा मादि चक्रे श्वरः शोक व्याधि विना स कुल भयह मृत्युं ज्ञय त्राहे मां ॥ आदित्य ॥ शाने मद्र
को धुधः गुहः शुक्रः शशीः श्वसुरः केतुयस्यः दशाविधान गतितः योगो स्थित जन्मनिः भावगो

वर्जित ज फला भुया सदा चेतः ॥ सिद्धिरस्तु क्रियारम्भेः सद्भिरनुधनगमेः पुष्टिरस्तु सौरेरेषु शाः कौरव
गृह सुखः शर्वी विप्र प्रशमनः सर्वशक्ति करशुभः आयु पत्र च काम च लोभे संतति वर्द्धन जथा वारा प्र
हारताः कवचोः तद्वेव विधाता ता शक्ति भवतु वारणः ॥ जजमानस्य वंधुसिंदुरा रोहता कलसा चेतन
निमित्त्यथ किमशुभं पुष्य भाजन स रययाभिः ॥ देवज्ञत वाक्य न सूर्यायः ॥ ॥ गुरुनमस्कारः ॥
न्यासः ॥ मृत्युं जय नमः ॥ ॐ जुं सह दयादि षड्गुणे न न्यासः ॥ अर्घ्याय पुजाः ॥ गंगे च जसुरोभ्यः गोदावारे
सर्प्यतिः ॥ नमः दे सिधुकावेरिः जलतस्मी न संजुहः ॥ ॐ हृदयाय नमः ॐ सिरसे नमः ॐ शिखाय नमः
ॐ कवचाय नमः ॥ ॐ नेत्रत्रयीयाय नमः ॐ कवचाय नमः ॐ शोभन भूषणाय नमः ॥ ॥ अर्घ्याय नमः ॥ आ
वाहनादि चंदनाद्यैः पुष्यनमः ॥ आत्मने सिंचनं नमः ॥ आत्मने चन्दनं नमः ॥ आत्मने पुष्यं नमः ॥ आत्म

मासनायनमः॥ आत्मसुर्तयनमः॥ ॥ अर्घ्यात्रयालंघनहायसकभनः॥ ॐ भवि विउ पवी जो वा
 सर्वाङ्गं स्त्रु गतोपि वा॥ यस्मरेते पुंदरिकाव्यः सर्वाङ्गाभ्यां कुरु भुवि ॥ ॥ ॐ पूर्णकलसाय नमः
 ज्ञेय अमृतिश्चराय शक्ति सहितायः सागायः सगरा योरिव रायभ्य ददमासुनंतमः पुष्यनमः॥ ॥
 ततो वा न पुजाः॥ ॐ नदीनेनमः॥ ॐ भृगुनेनमः॥ ॐ महाकालयनमः॥ ॐ विनायकायनमः॥ ॐ
 वासनायनमः॥ ॐ स्कंदायनमः॥ ॐ देव्येनमः॥ ॐ चंडायनमः॥ ॐ आधारशक्तयनमः॥
 ॐ अनन्तायनमः॥ ॐ स्कंदायनमः॥ ॐ अंकुलायनमः॥ ॐ पद्मायनमः॥ ॐ पत्रायनमः॥
 ॐ केसलायनमः॥ ॐ कीर्तिकायनमः॥ ॐ धर्मायनमः॥ ॐ ज्ञानयनमः॥ ॐ वैराजायनमः॥ ॐ
 स्वर्गायनमः॥ ॐ अज्ञानायनमः॥ आवाहनादि चन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ नृत्तय महादेवगिरि

जासहमोदितः अस्मिन् पुजाः विधानं समागच्छत्याहाः॥ ॥ आसनं॥ ॥ द्वायनायनमः॥ ॥
 नायनमः॥ ध्यानं॥ ॥ सवभे सल्लितं देवः हिमं कुं देव सति भः सेकवकं विनेत श्रुद सभुजं महेश्वरः॥
 विश्रुताक्षधरं देवं वलाकरः सधारिणः॥ वामो लुप्तगता देविः द्विभुजा कललो वरा हेमाभरणा भूषां
 गोस्वतां स्वरविभुषिताः येवा मृतिश्चरे व्यात्वा सर्वपापप्रणासनं॥ ॐ सपूर्णकलसाय नमः
 य अमृतिश्चरि सहिताय ध्यानपुष्यनमः॥ ॐ वृषधजायनमः॥ ॐ गगायनमः॥ ॐ जमुनायनमः॥
 ॐ नर्मदायनमः॥ ॐ कावेरिनमः॥ ॐ सरस्वतिनमः॥ ॐ कोमलिकेनमः॥ ॐ गंधकेनमः॥ ॐ वा
 जसत्पेनमः॥ आवाहनादि चन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ हृदयायनमः॥ ॐ शिरसेनमः॥ ॐ शिवाय
 नमः॥ ॐ कवचायनमः॥ ॐ नेत्रत्रियायनमः॥ ॐ अष्टायनमः॥ आवाहनादि चन्दनाक्षतपुष्यनमः॥

ॐ गीतमातमायनमः॥ ॐ भारद्वाजायनमः॥ ॐ विश्वामित्रायनमः॥ ॐ यमदग्नियनमः॥ ॐ वशिष्टाय
नमः॥ ॐ काश्यपायनमः॥ ॐ अत्रिभ्यांनमः॥ ॐ अरुधातेनमः॥ ॐ सप्तर्षिभ्योनमः॥ आवाहनादि
चन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ सद्योजातायनमः॥ ॐ वामदेवायनमः॥ ॐ अघोरायनमः॥ ॐ तत्पुर्वाय
नमः॥ ॐ इशानायनमः॥ ॐ शशिशिवायनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ आदित्याय ई
श्वराय अग्निप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ सोमाय उमाय अपप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ अंगारयस्कंदा
क्षते प्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ वृधाय नारायणाय विष्णुप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ वृहस्पतयवृहते
इन्द्रप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ भुक्त्राय सक्त्राय शचीप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ शनिश्चरायः यमाय प्रजा
पतिप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ राहुवेकालाय सूर्यप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ केतवे चित्रगुप्ताय व

लप्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ जमने सप्तर्षिभ्यो हिरण्यगर्भाय प्रत्यूषिदेवतायनमः॥ ॐ आवा
दिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ अश्वत्थामनेनमः॥ ॐ वलयनमः॥ ॐ व्यासायनमः॥ ॐ हनुमतेनमः॥
विभीषतायनमः॥ ॐ कृपायनमः॥ ॐ प्रसुरमायनमः॥ ॐ माक्षरुडेयनमः॥ ॐ अष्टचिरंजीविभ्यो
नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ ईश्वरायनमः॥ ॐ अग्नेयनमः॥ ॐ यमायनमः॥ ॐ नैरित्या
यनमः॥ ॐ वरुणायनमः॥ ॐ वायुयनमः॥ ॐ कुवेरायनमः॥ ॐ इशानायनमः॥ ॐ अधास्तायनमः॥
ॐ उर्वस्तायनमः॥ ॐ ईश्वरादिदसलोकपालेभ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ सुमंगल
द्वारायनमः॥ सुहोद्वारायनमः॥ सुभद्रद्वारायनमः॥ यमलद्वारायनमः॥ चतुर्द्वारायनमः॥ आवाहना
दिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ कृतयुगायनमः॥ ॐ त्रेतायुगायनमः॥ ॐ द्वापरयुगायनमः॥ ॐ कलियुगा

यनमः॥ चतुर्युगे भ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ रिग्वेदेयनमः॥ ॐ यदुवेदेयनमः॥
ॐ सामवेदेयनमः॥ ॐ अथवेदेयनमः॥ ॐ चतुरवेदेयनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ जा
सुद्विपायेनमः॥ ॐ शाकद्विपायेनमः॥ ॐ कुसुमद्विपायेनमः॥ ॐ क्रौंचद्विपायेनमः॥ ॐ पक्षद्विपायेनमः॥
ॐ गोमधद्विपायेनमः॥ ॐ पुष्करद्विपायेनमः॥ ॐ सप्तद्विपायेनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपु
ष्पंनमः॥ ॐ क्षालसमुद्रायनमः॥ ॐ क्षीतसमुद्रायनमः॥ ॐ सर्पिसमुद्रायनमः॥ ॐ दधिसमुद्राय
नमः॥ ॐ इक्षुसमुद्रायनमः॥ ॐ मदिसमुद्रायनमः॥ ॐ स्वादसमुद्रायनमः॥ ॐ सप्तसमुद्रायनमः॥ आ
वाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ तलायनमः॥ ॐ पातालायनमः॥ ॐ रसातलायनमः॥ ॐ सप्तपाताला
यनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ जमलोकायनमः॥ ॐ तपलोकायनमः॥ ॐ महलोकाय

नमः॥ ॐ भुवलोकायनमः॥ ॐ भूलोकायनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ क्षालस
मुद्रायनमः॥ ॐ क्षीतसमुद्रायनमः॥ ॐ सर्पिसागरायनमः॥ ॐ दधिसागरायनमः॥ ॐ इक्षुसा
गलायनमः॥ ॐ मदिसागलायनमः॥ ॐ स्वादसमुद्रायनमः॥ ॐ सप्तसमुद्रायनमः॥ आवाहना
नादिचन्दनाक्षतपुष्पंनमः॥ ॐ तलायनमः॥ ॐ तितलायनमः॥ ॐ सुतलायनमः॥ ॐ वितलाय
नमः॥ ॐ तलातलायनमः॥ ॐ पातालायनमः॥ ॐ रसातलायनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पं
नमः॥ ॐ जमलोकायनमः॥ ॐ तपलोकायनमः॥ ॐ महलोकायनमः॥ ॐ भुवलोकायनमः॥ ॐ भू
लोकायनमः॥ ॐ भुवलोकायनमः॥ ॐ सत्पलोकायनमः॥ ॐ सप्तलोकायनमः॥ आवाहनादिचन्दना

दिचन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ वसन्तायनमः॥ ॐ त्रिषमायनमः॥ ॐ वर्षायनमः॥ ॐ सन्तायनमः॥ ॐ हेमन्ता
यनमः॥ ॐ शिशिलायनमः॥ ॐ षत रितुभ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ षोदेवताय
नमः॥ ॐ ध्रुवायनमः॥ ॐ सोमायनमः॥ ॐ धृतयनमः॥ ॐ अनलायनमः॥ ॐ अनिलायनमः॥ ॐ
प्रत्यूषायनमः॥ ॐ प्रभासायनमः॥ ॐ अष्टवसुभ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ अ
जेकपालायनमः॥ ॐ अहेबुधायनमः॥ ॐ विरूपाक्षायनमः॥ ॐ हरायनमः॥ ॐ वङ्गरूपायनमः॥
ॐ त्रायकायनमः॥ ॐ सुलेश्वरायनमः॥ ॐ सावित्रीयनमः॥ ॐ जयन्तिनेनमः॥ ॐ पिताकिनेनमः॥
ॐ अपराजितेनमः॥ ॐ ऐकादसकृद्वनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ हस्त्यायनमः॥

ॐ धाडेनमः॥ ॐ भगायनमः॥ ॐ पुष्यनमः॥ ॐ पित्रायनमः॥ ॐ वरुनायनमः॥ ॐ अर्यसनायन
मः॥ ॐ विश्वामित्रेनमः॥ ॐ अंसवेनमः॥ ॐ सवित्रेनमः॥ ॐ त्वष्ट्रेनमः॥ ॐ विष्टुवेनमः॥ ॐ द्वाद
सादित्यभ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ प्रतिपदायनमः॥ ॐ द्वितीयायैनमः॥
ॐ तृतीयायैनमः॥ ॐ चौथेनमः॥ ॐ पञ्चमेनमः॥ ॐ षष्ठेनमः॥ ॐ सप्तमेनमः॥ ॐ अष्टमेनमः॥
ॐ नवमेनमः॥ ॐ दशमेनमः॥ ॐ एकादशमेनमः॥ ॐ द्वादशमेनमः॥ ॐ त्रयोदशमेनमः॥ ॐ चतुर्द
शमेनमः॥ ॐ पूर्णिमायैनमः॥ ॐ अमावास्येनमः॥ ॐ प्रतिपदादितिथिभ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दना
क्षतपुष्यनमः॥ असुत्यादिअस्ताविसतिनक्षत्रेभ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ ॐ

स्कन्धादिस प्राविशंति योगे भ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पनमः॥ ॐ ववाधिकर्णे भ्योनमः॥ आवा
हनादिचन्दनाक्षतपुष्पनमः॥ ॐ शिवादि मुकुटत्रे भ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पनमः॥ ॐ मेवा
दिद्वादरासि भ्योनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पनमः॥ ध्वतेकलसनपुजा ॥ ॥ अथापरिपुजाः ॥
जन्मपात्रिकासः ॥ ॐ जन्मनेतमः॥ ॐ जन्मासनायनमः॥ ध्यानं ॥ ॐ धौतयद्वासमासीनं चतयद्वासुखासि
नं अक्षपुस्तकहृच्चरोयं श्रद्धायाते ॥ जन्मनेमपरिषीर्भ्याहिरगत्प्रत्यधिदेवताय ध्यानपुष्पनमः॥ ॥
ॐ जन्मनेतमः॥ ॐ सपरिषि भ्योनमः॥ ॐ हिरण्यगङ्गा प्रतेधिदेवतायेनमः॥ ॐ अस्वस्त्रामेनमः॥ ॐ लयन
मः॥ ॐ व्यासयेनमः॥ ॐ हनुमतेयेनमः॥ ॐ विभिसनायनमः॥ ॐ कृपायेनमः॥ ॐ परशुरामायेनमः॥

ॐ माकरण्डेयायनमः॥ ॐ अष्टचिरंजीवे भ्योनमः॥ ॐ शसायनमः॥ ॐ यद्मायनमः॥ ॐ चक्रायनमः॥
ॐ मत्तयनमः॥ ॐ श्रियनमः॥ ॐ मुर्तयनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पनमः॥ ध्वतेनियतिनपुजाः ॥
अथसिन्दूरपुजाः ॥ ॐ लक्ष्मीनमः॥ ॐ उमायेनमः॥ ॐ कात्यायनीनमः॥ ॐ गीर्धेयेनमः॥ ॐ काल्ये
नमः॥ ॐ शाकंभय्येनमः॥ ॐ देव्येनमः॥ ॐ यद्मायेनमः॥ ॐ नारायनायनमः॥ ॐ पत्रायनमः॥
ॐ केसवायनमः॥ ॐ कार्तिकायनमः॥ ॐ धात्रेनमः॥ ॐ विधात्रेनमः॥ ॐ गनयतयनमः॥ ॐ गुरुयेन
मः॥ ॐ क्षत्रयालायनमः॥ ॐ दीपिनमः॥ ॐ पवित्रायनमः॥ ॐ सुवस्त्रायनमः॥ ॐ सिन्दूरिवलुभ्यानि
मः॥ ॐ सोभाग्यरूपायनमः॥ ॐ सुसोभाग्यरूपायनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पनमः॥ ध्वतेवि

दुरपुजाः॥ ततोचन्द्रमण्डलपुजाः॥ ॐ चन्द्रमस्य आगच्छ आगच्छ स्वाहाः॥ ॐ चन्द्रमूर्तये नमः॥ चन्द्रमसे नमः॥
ॐ सृष्ट्युजयाय नमः॥ ध्यानं ॥ श्वेतस्वेताम्बरधरं चतुःपद्मकरद्वयं हंसासनास्थितं देवं वंद्याय तित्पति
साकारं ॐ वन्दे मस्ये ध्यानपुष्यं नमः॥ ॐ चन्द्रमसे नमः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥ ॐ कुटुम्बाय नमः॥ ॐ विष्णवे
नमः॥ ॐ नातं क्रवे नमः॥ ॐ सुः भ्रातवे नमः॥ ॐ शशलां चनाय नमः॥ ॐ रजनीयतय नमः॥ ॐ वसुधिसा
य नमः॥ ॐ निशाकलाय नमः॥ ॐ अङ्गुय नमः॥ ॐ जेवादिवाय नमः॥ ॐ सोमाय नमः॥ ॐ मृगार्क्य
नमः॥ ॐ ताराधिपतये नमः॥ ॐ विजराजाय नमः॥ ॐ ओदसाधिपतये नमः॥ ॐ मद्योजाताय नमः॥ ॐ
वामदेवाय नमः॥ ॐ अधोराय नमः॥ ॐ तत्पुरुषाय नमः॥ ॐ इक्ष्वाक्याय नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षत

पुष्यं नमः॥ गायत्रीयथे॥ शिवतत्त्वाय विद्महे विद्यातत्त्वाय धिमहि आत्मतत्त्वाय प्रचोदया॥ ॐ
गायत्रै नमः॥ ॐ सोममूर्तये नमः॥ ॐ चन्द्रमूर्तये नमः॥ ॐ विष्णुमूर्तये नमः॥ ॐ अमृतमूर्तये नमः॥ ॐ
सोमः मण्डलाय नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यं नमः॥ ॐ मार्गसिन्धुः सोमाय नमः॥ ॐ यौधे
निमायतये नमः॥ ॐ माघेशितां सवे नमः॥ ॐ फाल्गुणोर्मिदुन्दराय नमः॥ ॐ चैत्रेमनोहवाय नमः॥
वैशाखे निमाकराय नमः॥ ॐ ज्येष्ठ आत्रेनेत्राय नमः॥ ॐ आषाढे शम्भुभुवनाय नमः॥ ॐ श्रावणे
इन्द्रवे नमः॥ ॐ भाद्रपदमुदवाहनाय नमः॥ ॐ आश्विनांताराधिपतये नमः॥ ॐ कार्तिके पूर्णच
द्राय नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यं नमः॥ यतिनपुजाः॥ ॐ आदिन्याय नमः॥ ॐ सोमाय

नमः॥ ॐ अंगाराय नमः॥ ॐ उधाय नमः॥ ॐ वृषपतय नमः॥ ॐ भुक्ताय नमः॥ ॐ शनिश्चराय नमः॥
ॐ राक्षसे नमः॥ ॐ कोतय नमः॥ ॐ जन्मने नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥ ततो वलिपुजाः॥
आधारादि ८॥ प्रेतात्मनाय नमः॥ ॥ ध्यानं ॥ ॐ प्रताप्तनं स्थितं देवः नीलवर्णकवक्रकं त्रि
नेत्रं षड्भुजं देवः षड्भुजं देवः षड्भुजं देवः षड्भुजं देवः षड्भुजं देवः षड्भुजं देवः
दिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥ ॐ अस्वस्थानक्षत्रयालाय नमः॥ ॐ नेपालवद्धलादेवी नमः॥
ॐ प्रियागेः माहेश्वरिदेवी नमः॥ ॐ लंकायाराक्षसिदेवी नमः॥ ॐ अलितांगभैरवाय नमः॥
ॐ रुरुभैरवाय नमः॥ ॐ चन्द्रभैरवाय नमः॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः॥

ॐ कपालभैरवाय नमः॥ ॐ भिषगभैरवाय नमः॥ ॐ रौद्रभैरवाय नमः॥ ॐ चन्द्रभैरवाय
नमः॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः॥ ॐ कपालभैरवाय नमः॥ ॐ भिषगभै
रवाय नमः॥ ॐ रौद्रभैरवाय नमः॥ ॐ शंकरभैरवाय नमः॥ ॐ पूर्वगणपतय नमः॥ ॐ आ
ग्नेयदुर्गाय नमः॥ ॐ दक्षिणेश्वर्यानाय नमः॥ ॐ नैरित्यराक्षसाय नमः॥ ॐ वारुणो वायु
व्य नमः॥ ॐ वायुव्यकुमाय नमः॥ ॐ उत्तरे पीशाश्वभ्यो नमः॥ ॐ इशानेन्द्राय नमः॥ आवा
हनादिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥ हृंहृदयादिषड्भुजं नमः॥ ॐ विष्णुपुजाः॥ ॐ दिनकराय श्रीमू
र्याय नमः॥ ॐ सदाशिवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥ ॐ लक्ष्मीमूर्तय नमः॥ ॐ इष्टदेवताय नमः॥ ॐ ना

गायमुर्तयतमः॥ ॐ हनुमत्तै नमः॥ ॐ गुरुवे नमः॥ ॐ जोगिन्यै नमः॥ ॐ क्षत्राय नमः॥ ॐ गणपतये
नमः॥ ॐ दुर्गाय नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥ ॥ श्रीगणेशपूजाः॥ आधारादि ८॥ ॐ मुक्ता
सनाय नमः॥ ॥ ध्यानं ॥ महामुक्तासनदेवं स्वेतवर्णविलोचनं परसुअक्षतमालं श्वः मूलं लङ्काया
नृचः नागजशैवपितृनागाभरणभूषितं सर्वधात्यागणेशं सर्वशक्तिनमाम्यहं॥ श्रीगणेशाय
ध्यानपुष्पं नमः॥ ॐ गणपतये नमः॥ ॐ हेरम्बाय नमः॥ ॐ लम्बोदराय नमः॥ ॐ विघ्नेश्वराय नमः॥
ॐ एकदत्ताय नमः॥ ॐ सुपर्काय नमः॥ ॐ मुखिकासनाय नमः॥ ॐ सिद्धिविनायकाय नमः॥ ॐ प
रसुहृन्नाय नमः॥ ॐ रुनिहन्नाय नमः॥ ॐ विनेत्राय नमः॥ ॐ गजाननाय नमः॥ ॐ उनयंचासगरा

पतये नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥ वलिमपूजाः॥ आधारादि ८॥ ध्यानं॥ वसुंधराय
गमाट्सर्वसंपत्तिदायिनीः पुत्रपौत्रादिकदातो नमानित्वं परेश्वरिध्यानपुष्पं नमः॥ ॐ वसुंधराय
नमः॥ ॐ जातोदिवृद्धदेवताय नमः॥ हृदयादिद्वन्द्वं नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥
गोग्रासपूजाः॥ आधारादि ८॥ ध्यानं॥ अमृतमथत्वां न्यलीः सुलभ्यां लोकधारिणिः गवामंगेषु तिष्ठ
ति भुवनानि चतुर्दशः सर्वथा देहलोधनीः ध्यातव्या सर्वकालेषु पवित्रीयापमोचनी कपिलादि गोमा
त्रीकाभ्यो ध्यानपुष्पं नमः॥ ॐ नदाय नमः॥ ॐ भद्राय नमः॥ ॐ मूलभननः॥ ॐ सुलिलाय नमः॥ ॐ
सरस्वत्यै नमः॥ ॐ पंचगोमात्रीकाभ्यो नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥ कौमारिपूजाः॥

आधारादि ८॥ ॐ मयूरसनायनमः॥ ध्यानं ॥ मयूरसनायनः रक्ताभामेकवक्त्रात्रिलोचणीः शतक्षवि
 दुमुद्रांचकोमारीः सवतारिणीः कोमारिमुर्तयध्यानपुष्यंनमः॥ ॐ मयूरसनायनमः॥ ॐ कोमारीमु
 र्तयनमः॥ ॐ रक्तयद्रासनायनमः॥ ॐ शक्तिहस्तायनमः॥ ॐ सुत्रहस्तायनमः॥ ॐ कमराडकृ
 णायनमः॥ ॐ वरहतायनमः॥ ॐ लोहितवसुप्रिधारायनमः॥ ॐ ब्रह्मायनेनमः॥ ॐ माहेश्वर्य
 नमः॥ ॐ कोमार्यनमः॥ ॐ विष्णुवेनमः॥ ॐ वाराह्येनमः॥ ॐ इन्द्रायनेनमः॥ ॐ चामुद्रायनमः॥
 ॐ महालक्ष्मीनमः॥ ॐ चन्द्रिकायैनमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यनमः॥ रुक्मकंपुजा॥ ॐ श
 येनमः॥ ॐ दर्पनायनमः॥ ॐ दर्पनस्तुमदाकार्यचराडाभुर्स्वसपदभं इहपुर्वागिया पाणिअल

क्ष्मीकलहनासनं॥ ॥ सिंधुमूः॥ ॐ लक्ष्मीनमः॥ ॐ सिद्धरभाजनायनमः॥ ॐ लक्ष्मीनरुप
 भ्योश्रियसो भाग्यमुतमः अपुठप्रदंसुखंदहिलाक्षिभावसुखंभवेत्॥ स्नानादिचन्दनाक्षतपुष्यः॥
 धूपः॥ दीपः॥ नैविद्यादिः॥ आचमनियं॥ धूपकनस्पतिरमात्यन्तोः तानागंधकुसुमपदः आर्घ्यानां
 सर्वदेवानांधूपोयंप्रतिगृहेतां॥ दीपः॥ सुपकासो महादीपं सर्ववतिमिराग्रहः सर्वायाभ्यांतरं
 जोतिः दीपोयंप्रतिगृहेतां॥ फलः॥ फलंचविविधाकालः कदलीयमलादिकः इक्षुपुर्णादिस
 हितंतां सुखाप्रतिगृहेतां॥ नैवदे॥ नैवद्यं गृहदेवेवसक्तिमेअचलांकृत्ः॥ तायहोलेः॥ यावभा
 भास्वारस्य प्रथमतिभवताः यावदाकासगंगाः यावदाकासमार्गे गगणगणपतिगोपतिर्वागरो

शं ३ यावदब्रह्मापिताको हरिकमलजलवेदसिद्धांतवारिणः तावत्पुत्रपौत्राः स्वजनपरिवृतास्तद्वृत्तेरा
जलक्षीः ॥ ॐ नमस्तस्मात्करदाभवतुः ॥ जयः ॥ गायत्रि १२ ॥ स्तोत्रः ॥ ॐ मुर्तिनां देवतानां सकलनादिनि
र्थं गंगादितोयैः १ रत्नोषधीभिः फलकुसुमजुतेः २ च सन्यस्तवेना विघ्नानां धंसहेत्र ३ कलुषघृष्टहलः स
र्वयज्ञैः प्रकृतं वदे ४ ॐ नमस्तु पंशिवमिति कलसं मङ्गलं मङ्गलानां ॥ इन्द्रासको देवो लोकपालो कपा
तददिगसहिताः ब्रह्मविष्णुश्च रुद्राः आदित्यादिगुरुश्चेत भुवनः भुवतले जन्म देवस्वरूपः शिक्षायोग
श्रुतिथ्या गणगुरुवतुकाः क्षत्रपालाग्निदेवाः स्तौ देवासमस्ताः प्रदम्यसितसामर्षदेवाश्च मर्षी ॥ ॥
अथ रथामावलीव्यासोः हनुमानश्च विभीषणः क्षपाः परशुरामाश्च माकरण्डियो यतेनमः ॥ विघ्नेश्वरा

यविरायः विश्वरूपाय ते नमः सर्वविघ्नहरदेवं सर्वशक्तिनमाम्यहं ॥ नित्यानन्दपरमात्मनिष्कल
कान्तिरामसं ॥ यो मां तीत परं शून्यं भैरवतनमाम्यहं ॥ ॥ नमस्ते कपिले देवी नमस्ते शूजपूजिते य
पित्रं सर्वधेनुः पूजितं नमाम्यहं ॥ ॥ कोमारि मयठारुधारतां क्रिरक्तवाशिनी शश्वक्षविद्युमुद्राश्च
गुह्यश्चरितजुते ॥ इन्द्रश्चन्द्रो निशानाथः शीतां १ शुः शंशलां हनः १ मृगार्कश्च चन्द्रमा १ सोमोऽश्वि
स्ताराधिपः शशि ॥ ॥ द्विजरजोः मृतां शुश्चन्द्रश्च शशश्च वाकुनः ॥ पुरांचन्द्रो पुनतानि संध्याका
लसदापथे ॥ सर्वयापविनिमुका १ सोमलोकं सगच्छति ॥ नमस्ते जीवभुताय नमः कुमुदवाध
वः ॥ नमः कलाधिनाथाय लोहिलीपतये नमः कार्यकारणसर्वधाता त्वं परमेश्वरि ॥ ॥

ल्मीसंनतिः सोभाग्यं दायितित्यां न मास्यहं ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वपापविनिमुक्तंतिः ॥ इष्टदेवन
 शुभ्यं कुलदेवो नमो नमः ॥ स्वानदेवग्रहसर्वैः पुजागृह्यसिद्धमेयथावानप्रहाताराणां कवचं भवतु
 वारणं तत्रदेवविधातानां शक्तिं भवतु वारणं ॥ जजमानस्य वधुसिन्दुरागोहराकलसार्चनवि
 धौ अत्रगन्धः पुष्पः धूपः दीपः नैविद्यादिपूजाविधानं तत्सर्वविधिपरिपूर्णमस्तु ॥ ॥ जज
 माननः ब्राह्मणः जोषिपुजायाचकेः हस्तार्धः चन्दनः धूपः दीपादिपुजायाकावः स्वानजाव्यसोपो
 लविद्यकाः ब्राह्मणस्त्वस्तिवाचयाकेः स्वस्तिस्वाननजजमानतनेः ॥ ॥ स्वानलेकागुस्वानअर्घ
 पाचसथुनाजजमानयातहायः विधनस्वानवियः ल्पंकागुकलसस्तयः ॥ ॥ धनमिसाथका

डिनीननः वधुरावाकाः हेवरोगलंघनचोयाः जाकेहोलाः लंघधातथयाः वयुत्तासावावहयाकल
 लयाः हेवनेः स्वस्तिस्तयावः निर्मलद्वारायाकेः ॥ पापपापवसानित्यः सर्वपापः क्षयायचः लक्ष्मी
 लधिकारं नित्यः सर्वपापक्षयायचः निर्मलद्वारोमिहं ॥ इकापल्कानमिसाथकाडिनगाता ३ व
 मतवियाः जाकेलंघनपियावः मतस्तयावः व्यवातयुमतयः ॥ हापांस्वस्तिवाचनयास्वानलेनका
 कलसः सतयानकायाः अर्घपाचसथुनावः धुयातलंघनहायाः स्वानवियः कलसादिः जजमानः वधु
 मिसाः थकाडिनकलसादिपुजायाकेः धूपदिपः नैविद्यादिः ताम्बूलः फलः मुखमुद्रिद्वयकेः जाकि
 लंघवियाः ईदपुष्पधूपदीपः नैविद्यादिताम्बूरफलदिमकताः सकल्पसिद्धिरस्तु ॥ ॥ वंधुयातम

तक्रतालचानन्वाकेः कलसंसं वंधुयातः निप्रतिनः खववोहलसः पायकेः चिह्नसिंदुरत्वायः पातचंद्र
 मराडलभुः वंधुयातिवरोतयः कुतवधुगायकाः चंद्रमंराडलसतयः चिह्नअतिनः चोलसध्याकेः मिमा
 थकादिनः सिंदुरद्वयकेः सिंदुलंसिंदुधाय्यस्वस्तिनोदिर्घजोवितः धनसतानः कामार्थः सिंदुरं
 दक्षिदायकं ३ चंद्रनादिसगुनामिर्घादअननः यज्मानस्वस्तिनः लामालावयनेः स्वस्तिफेतुकेः नि
 म्मर्दनादिः मतफः तालचासगुराद्यायः सिंदुरसलिजववोहलसध्यायः प्राप्तमुन्यायः लिंवरो
 चंद्रमंराडल प्राणः अंगुलिह्वाकेजवचोलाल सिंदुरः कामलनगालविलिवनेः चंद्रमंराडलसतयः
 सिंदुरद्वयः चंद्रनसगुराआमिवादः लुचेतः गवयग्वालकलसादिसध्यायवियः ॥ बालसादिपुजाः

ब्राह्मणजोतिपुजाः ॥ दक्षिणातयकेः देवदक्षिणादं १६ जोतिब्राह्मनयातः वाचतकायः न्यासविम
 जनयायः ॥ चंद्रनादिसकलयातवियः जाकेवो १६ निसजां १ सकतां जोतिया ॥ ॥ ॐ नमोशिवायः
 स्वस्तिजय्या सदादिय्यः स्वस्तिमार्तराउयेवच ॥ योगिगोः स्वस्तिमय्याचः स्वस्तिपिथाचः क्षत्रजा ४
 पुर्वदक्षिनः श्वेवः पश्चिमोत्तरयेवचः स्वस्तिमर्वसडंगेचः गुप्तः पकासदेवता ३ ॥ भैरवाभैरवीसर्वा
 स्वस्तिचाव्काव्योगिणीः स्वस्तिब्रह्मा रविबीडुः स्वस्तिहृद्रसदाशिव ३ ॥ विनायक ४ कुमालश्च ४ स्व
 स्तिरिषय ४ सप्रकाः स्वस्तिलोकपालश्चः स्वस्तितेचनवग्रहा ४ स्वस्तितिथयनक्षत्रः योगरासितथे
 वचः स्वस्तिपालाः रिनुस्वस्ति ४ अहाराडश्चवसरं ॥ समुद्रा ४ पर्वतास्वस्तिमप्लोकासरिमृपा ४ स्व

स्तियश्वाश्च गंधवाः यत्तस्माच्च स वास्तथाः ॥६॥ स्वस्ति वसुमतिश्चापः तेज वायुश्च व्योमकं ॥ तृणवक्ष
 स्तृणस्वस्तिः भुतग्रामश्चतुर्विधः ॥७॥ यो गिनी स्वस्ति वीलेन्द्राः कुलजाक्षचरितथा ॥ स्वस्ति वेदायुग
 स्वस्ति गायत्री व्याहृतिरुथा ॥८॥ स्वस्ति राजा प्रजा नां चः सत्त्वानां भोनवे सुचः ॥ आचार्य शुक्रिया
 पर्वस्तिः स्वस्ति यज्ञ सुमर्षदा ॥९॥ मंगलाष्टक वे स्वस्तिः स्वस्ति देवग्रहे सुचः ॥ यजमान सादा स्वस्ति
 एष्यंतु सर्व देवता ॥१०॥ इति स्वस्ति वाचन ॥

आशा भद्रा ॥ १४३७ ॥
 ASHA ARCHIVES

ॐ नमः ॥ श्री वाग्मये ॥ ॐ स्वस्ति वाचः ॥ गिरन्व आचमनीयः ॥ गंगाद्याः ॥ पंचांगुलमानः ॥ सिद्धि ॥ ऊज पपित ॥ पित
 वा ऊजः ॥ पूष्य वकुलवानधू पदीयने विद्युः ॥ ऊज मानन सूर्यार्धः ॥ कात्यग्रम उयज मानानां यथा ॥ सुकाह
 ल कामनया वर्ध वर्धना ॥ यत्र कस्तनस्य निर्वृत्ति निर्मितिर्ध्वं कर्षी ॥ सूर्याय ॐ नमः ॥ पूष्याय ॐ नमः ॥

ॐ ह्मदासनाय नमः ॥
 ॐ देव्यै नमः ॥
 ॐ चण्डाय नमः ॥
 ॐ सुमंगलाय नमः ॥
 ॐ सुहोत्राय नमः ॥
 ॐ सुभद्राय नमः ॥
 ॐ मंगलाय नमः ॥
 ॐ चण्डाय नमः ॥
 आवाहनादिद्वार्यनविध्य
 तद्विधिपरिपूर्णम् ॥ इ
 ति द्वायचनः ॥ ततो आसनं ॥
 ॐ आवाहनाय नमः ॥
 ॐ अनन्ताय नमः ॥
 ॐ ह्मदासनाय नमः ॥
 ॐ अकुलजे नमः ॥
 ॐ नावधेय नमः ॥
 ॐ ह्मविनमः ॥
 ॐ पञ्चाय नमः ॥
 ॐ केसराय नमः ॥
 ॐ केशिकाय नमः ॥
 ॐ धर्मोय नमः ॥

ॐ पञ्चाय नमः ॥
 ॐ केसराय नमः ॥
 ॐ केशिकाय नमः ॥
 ॐ धर्मोय नमः ॥
 ॐ ज्ञानाय नमः ॥
 ॐ वैराग्याय नमः ॥
 ॐ हेचर्याय नमः ॥
 ॐ अधर्मोय नमः ॥
 ॐ अज्ञानाय नमः ॥
 ॐ अवैराग्याय नमः ॥
 ॐ अमेचर्याय नमः ॥
 आवाहनादिचन्दनाक्षरपुष्प
 मः ॥ ॐ सुसुजयमहादेवगिरिजा
 सहसोदितं अभिमनेजा विधानः न
 ममो गच्छ महेश्वर आगच्छ स्वा
 हाः ॥ ॐ वृक्षासनाय नमः ॥
 ॐ सिंहासनाय नमः ॥ ततो ध्यानं ॥
 वृषभसिंहरुद्रतदेव हिमकुन्दे
 नृसन्निभः ऐककां विनेत्रवः च
 शुभ्रमहेश्वरः विश्वलाक्ष्मण
 देवपञ्चाकरसधानिना वासो ह्

त्र्यगतादेवि विभुजा कलस्वव
 रः ॥ हे मा भद्रा भुवा ह्रीं स्वेता
 म्बरविभुविता ॥ हे वासुति श्री
 ध्यान्वा नर्वपाप प्रनासिनीः ॥
 ॐ सप्तपुरी कलदाय सप्तुजया
 पश्चिमुती श्रीसिंहिनी हिताय
 ध्यानपुष्प नमः ॥ तत पुजनः ॥
 ॐ हृद्यो सनाय नमः ॥
 ॐ गंगायो नमः ॥
 ॐ यमुनायै नमः ॥
 ॐ नर्मदायै नमः ॥
 ॐ काव्ययै नमः ॥
 ॐ सरस्वत्यै नमः ॥
 ॐ भार्गवे नमः ॥
 ॐ कोसक्यै नमः ॥
 ॐ गण्डक्यै नमः ॥
 ॐ वाग्मत्यै नमः ॥
 आवाहनादि चन्दनाक्षरपुष्प
 नमः ॥ ॥ ॐ क्षारसुद्राय नमः ॥
 ॐ क्षीरसुद्राय नमः ॥
 ॐ दधिसुद्राय नमः ॥
 ॐ सर्पिसुद्राय नमः ॥

ॐ ईश्वरसुद्राय नमः ॥
 ॐ सुरासुद्राय नमः ॥
 ॐ दधोदकसुद्राय नमः ॥
 ॐ सप्तसुद्राय नमः ॥
 आवाहनादि चन्दनाक्षरपुष्पं न
 मः ॥ ॥ ॐ इत्युद्विषाय नमः ॥
 ॐ शायद्विषाय नमः ॥
 ॐ क्रोशद्विषाय नमः ॥
 ॐ प्रक्षद्विषाय नमः ॥
 ॐ गोमेधद्विषाय नमः ॥
 ॐ पुच्छद्विषाय नमः ॥
 ॐ सप्तद्विषयभ्यो नमः ॥
 आवाहनादि सप्तद्विषयभ्यो चन्द
 नाक्षरपुष्प नमः ॥
 ॐ गाराय नमः ॥
 ॐ निताय नमः ॥
 ॐ कुमाराय नमः ॥
 ॐ विनाय नमः ॥
 ॐ तलानाय नमः ॥
 ॐ रसानाय नमः ॥
 ॐ कामानाय नमः ॥

ॐ नमः शिवाय नमः ॥

॥

ॐ भुवनेश्वर नमः ॥

ॐ भुवनेश्वर नमः ॥

ॐ स्वर्गेश्वर नमः ॥

ॐ महेश्वर नमः ॥

ॐ जननेश्वर नमः ॥

ॐ तपस्विश्वर नमः ॥

ॐ सत्येश्वर नमः ॥

ॐ सप्तेश्वर नमः ॥ चन्द्र

देव नमः ॥

ॐ कृष्णेश्वर नमः ॥

ॐ वैश्वेश्वर नमः ॥

ॐ द्वापरीश्वर नमः ॥

ॐ कालेश्वर नमः ॥

ॐ चतुर्भुज नमः ॥

आवाहनादि चन्द्रनामैः पुष्प

नमः ॥

ॐ रिश्वर नमः ॥

ॐ यशस्विश्वर नमः ॥

ॐ आमुषेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ चतुर्भुज नमः ॥

आवाहनादि चन्द्रनामैः पुष्प

ॐ आदिश्वर नमः ॥

ॐ आदिश्वर नमः ॥

ॐ आदिश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ वृक्षेश्वर नमः ॥

ॐ वृक्षेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

आवाहनादि चन्द्रनामैः पुष्प

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ अश्वेश्वर नमः ॥

ॐ इशा नाय नमः॥
 ॐ अर्धमे नमः॥
 ॐ उर्ध्वमे नमः॥
 ॐ इन्द्रादिदशलोकपालेभ्यो
 नमः॥ आवाहनादिचन्दनाखे
 तपुष्यं नमः॥
 ततोऽपचलोकपालास्तु जनः॥
 ॐ गणाय नमः॥
 ॐ दुर्गायै नमः॥
 ॐ वायव्य नमः॥
 ॐ आकाशाय नमः॥
 ॐ अग्निशिखिमाय नमः॥
 आवाहनादिचन्दनाक्षतपुष्यं नमः॥
 ॐ पञ्चवक्रमदाशिवाय नमः॥
 मम नमः॥
 ॐ मद्योजाताय नमः॥
 ॐ वामदेवाय नमः॥
 ॐ अष्टोत्तय नमः॥
 ॐ तत्पुरुषाय नमः॥
 ॐ इशानाय नमः॥
 ॐ पञ्चवक्रमदाशिवाय आ
 वाहनादिचन्दनाखे नपुष्यं नमः॥

ॐ अथो नमः॥
 ॐ क्रवाय नमः॥
 ॐ क्षोमाय नमः॥
 ॐ विष्णवे नमः॥
 ॐ अनिलाय नमः॥
 ॐ अनलाय नमः॥
 ॐ तत्पुरुषाय नमः॥
 ॐ प्रभासाय नमः॥
 ॐ अखवसुभ्यो नमः॥ आवाहना
 दिचन्दनाक्षतपुष्यं नमः॥
 ॐ अजेकपादाय नमः॥
 ॐ अकिर्तुधाय नमः॥
 ॐ विरूपाक्षाय नमः॥
 ॐ हराय नमः॥
 ॐ वक्रपाय नमः॥
 ॐ अयङ्काय नमः॥
 ॐ सुरेश्वराय नमः॥
 ॐ मादिभिने नमः॥
 ॐ विनाकिने नमः॥
 ॐ जयकिने नमः॥
 ॐ अयराजिनाय नमः॥
 ॐ केवादशहृदयेभ्यो नमः॥
 आवाहनादिचन्दनाखे तपुष्यं न
 मः॥

ॐ यथायेनमः॥
 ॐ अस्तेषायेनमः॥
 ॐ मद्यायेनमः॥
 ॐ पूर्वपात्रुयेनमः॥
 ॐ उत्तरपात्रुयेनमः॥
 ॐ रुद्रायेनमः॥
 ॐ वित्रायेनमः॥
 ॐ च्छायेनमः॥
 ॐ विष्वावायेनमः॥
 ॐ अनुराधायेनमः॥
 ॐ जेष्ठायेनमः॥
 ॐ मूर्तायेनमः॥
 ॐ पूर्वषाष्टायेनमः॥
 ॐ उत्तराष्टायेनमः॥
 ॐ अभिजेतेनमः॥
 ॐ अवरायेनमः॥
 ॐ धनीष्टायेनमः॥
 ॐ शतभिषायेनमः॥
 ॐ पूर्वभद्रायेनमः॥
 ॐ रेवतीयेनमः॥
 ॐ अष्टाविंशतिनक्षत्रेभ्योनमः॥
 आवाहनादिस्तृताक्षरपुष्पनमः॥
 ॐ विष्णुस्त्रायेनमः॥
 ॐ शिवयेनमः॥

ॐ आयुष्मानयेनमः॥
 ॐ क्षोभायायेनमः॥
 ॐ क्षोभनायनमः॥
 ॐ अतिगण्डायनमः॥
 ॐ शुक्लनेनमः॥
 ॐ धूमयनमः॥
 ॐ श्रुतायनमः॥
 ॐ गण्डायनमः॥
 ॐ धुधयेनमः॥
 ॐ क्रवायनमः॥
 ॐ व्याघातायनमः॥
 ॐ रुक्मिणायनमः॥
 ॐ वर्ज्यायनमः॥
 ॐ शुक्रायनमः॥
 ॐ कान्तियातायनमः॥
 ॐ बालेनायनमः॥
 ॐ मारिषायनमः॥
 ॐ शिवायनमः॥
 ॐ सिद्धायनमः॥
 ॐ साध्यायनमः॥
 ॐ शुभायनमः॥
 ॐ शुक्रायनमः॥
 ॐ वृज्यायनमः॥
 ॐ इन्द्रायनमः॥

ॐ वैद्यति नमः॥

ॐ सम्राजि विजति यो गेभ्यो नमः॥

आवाहनादि चन्दनाक्षतपुष्प नमः॥

ॐ मेवाय नमः॥

ॐ वृथाय नमः॥

ॐ मिथुनाय नमः॥

ॐ कर्कोदाय नमः॥

ॐ सिंहाय नमः॥

ॐ कन्याय नमः॥

ॐ तुलाय नमः॥

ॐ विश्विकाय नमः॥

ॐ धनुषाय नमः॥

ॐ मकराय नमः॥

ॐ कुम्भाय नमः॥

ॐ मीनाय नमः॥

ॐ मेजादि द्वादश राशिभ्यो

नमः॥ आवाहनादि चन्दनाक्षत

पुष्प नमः॥ इति कलशार्चन

विधय नमः॥ विधय परिपूर्यमाण

तमो मगुण पुजाः॥ अथ स्वा

दि अक्षु चित्तं जीविभ्यो इदम

सन नमः॥ पुष्पाय नमः॥ आह्वा

दि पुष्पिका मनाय पुष्पाय नमः॥

ध्यानः॥ ॐ धोतय द्या मना सि

ॐ वैद्यति नमः॥

देवतवर्णा चतुर्भुजः अक्षपुष्पाय

नमः॥ अथ वराभय च ध्यायतेः जन

ध्यानपुष्पाय नमः॥ ॐ जन्मनेमि

विधिदेवताय हिरण्यगर्भप्रभा

विदेवताय नमः॥ ॐ अथ द्या

मने नमः॥ ॐ वल्लभाय नमः॥ ॐ

व्यासाय नमः॥ ॐ हनुमताय न

मः॥ ॐ विभिक्षायाय नमः॥ ॐ

कृपाय नमः॥ ॐ पराशराय न

मः॥ ॐ मारुताय नमः॥ ॐ

चन्द्रसेन नमः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥

ॐ कुमुदवाधवाय नमः॥ ॐ वि

धवे नमः॥ ॐ सिताय नमः॥

ॐ भ्रातृदेव नमः॥ ॐ दशरथाय

नाय नमः॥ ॐ राजनीपाय नमः॥

ॐ वृषधियाय नमः॥ ॐ निजाय

नाय नमः॥ ॐ अश्विन नमः॥ ॐ

जैवाय नमः॥ ॐ मेमाय

नाय नमः॥ ॐ मृगाय नमः॥ ॐ

राक्षसाय नमः॥ ॐ विजरा

क्षिपाय नमः॥ ॐ ओदराय

नाय नमः॥ ॐ अश्विन नमः॥ ॐ

वृजो विभो नमः॥ ॐ विधिपरिपूर

णाय नमः॥ ॐ अश्विन नमः॥ ॐ

वृजो विभो नमः॥ ॐ विधिपरिपूर

नमः॥ आवाहनादि चन्दनाघनपुष्प
नमः॥ ॥ नमोजन्मपवित्रकापुजनः॥
जन्मपवित्रकापनायनमः॥ ऊँ जन्मने
नमः॥ ऊँ जन्मासनायनमः॥ ध्याना
धेतपद्माननमादि॥ ऊँ जन्मनेन
मः॥ ऊँ सप्तारिषिभ्योनमः॥ ऊँ हि
रंयगर्हप्रत्यक्षिदेवतायनमः॥
ऊँ अक्षयामादि ८ विहजिबीभ्यो
नमः॥ ऊँ शायनमः॥ ऊँ पद्माय
नमः॥ ऊँ चक्रायनमः॥ ऊँ मन
यनमः॥ ऊँ शिष्यनमः॥ ऊँ श्री
सुन्दयनमः॥ आवाहनादि चन्द
नाक्षतपुष्पनमः॥ नमोवल्गार्ध
न॥ ॥ आलगादि ८ पादुका
पुजयामिः॥ प्रेतासनायनमः॥
ध्यानः ऊँ प्रेतामनश्चितदेवं नी
लाक्ष्मीः कवकाकैः॥ विनेत्रं च
सुजदेव्यं च कर्णिकधारकैः॥
सुगन्धलाहिरिभुषागंध्यातर्प्यक्ष
त्रयात्मकैः॥ ऊँ क्षत्रपालाय ध्या
नपुष्पनमः॥ ऊँ क्षत्रपालाय न
मः॥ ऊँ महाभैरवायनमः॥

ॐ देवदेवाय नमः॥ ॐ आसिष्टांगभे
 रवाय नमः॥ ॐ रुद्रभैरवाय न
 मः॥ ॐ चण्डभैरवाय नमः॥ ॐ
 क्रोधभैरवाय नमः॥ ॐ उन्मत्तभे
 रवाय नमः॥ ॐ कपालभैरवाय
 नमः॥ ॐ भिक्षुभैरवाय नमः॥
 ॐ संहारभैरवाय नमः॥ ॐ कूट
 श्रुतय नमः॥ ॐ नाथिहभैरवाय
 नमः॥ ॐ खल्लानभैरवाय नमः॥
 ॐ ह्रीं हृदयादिभक्तै नयुजाष्ट
 भावाहनादिभक्तै नक्षत्रयुक्तै नमः॥
 ॥ तत्तोगोहजातुगणपत्पार्व
 तं॥ आर्थादिह॥ ॐ सुखासनाय
 नमः॥ ॐ सुखलभुभक्तैः पा
 र्श्वविन्दुमुद्रय॥ सर्वसिद्धिह
 रं नाथं गजराजयते नमः॥ ॐ गण
 पतय ध्यानयुक्तै नमः॥ ॐ स्वैरुप
 आय नमः॥ ॐ क्लृप्तसुखाय नमः॥
 ॐ योगिसुखाय नमः॥ ॐ श्यामसु
 आय नमः॥ ॐ रक्तसुखाय नमः॥
 ॐ गणाय नमः॥ ॐ हेरम्बाय
 नमः॥ ॐ लम्बोदराय नमः॥ ॐ वि

ॐ अथ नमः॥ ॐ देवदत्ताय न
मः॥ ॐ सुखं कर्णाय नमः॥ ॐ सु
खिका ममाय नमः॥ ॐ मित्रि वि
नायकाय नमः॥ ॐ परं सुरमा
य नमः॥ ॐ पादहस्ताय नमः॥
ॐ इति हस्ताय नमः॥ ॐ विनेवा
य नमः॥ ॐ गजाननाय नमः॥ आ
वाहनादि चन्दनाक्षतपुष्पय नमः॥
जानपत्यार्चनविधयस्तर्पणविधि
परिपूर्यन्तुः॥ ॥ ततो गोप्रा
प्तपुजनः॥ ॐ कपिलादिपंचगे
माह्वयो नमः॥ इदमात्मनम
॥ पुष्पय नमः॥ आचार्यदि
ॐ पद्मात्मनाय नमः॥ ध्यानः॥
ॐ अस्तपथनात्पनासुरभीति
कधारिणी गङ्गा मनेष्टुतिष्ठति
भुवनादि चतुर्दशः॥ सर्वेषां मा
तृभुतानां सर्वेषां देहप्रोक्षणी॥
ध्यानया सर्वेषां जेषु पावित्रीया
यमोचनिः कपिलादिपंचः गोमा
त्रीभ्यो ध्यानपुष्पय नमः॥ ॐ नमः
य नमः॥ ॐ भद्राय नमः॥ ॐ सु
मनसे नमः॥ ॐ सुमिताय नमः॥

ॐ सुरये नमः॥ ॐ कपिलादिपंचगे
मात्रीभ्यो नमः॥ आचार्यनादिपंच
गेमात्रीभ्यो नमः॥ कपिलादिपंचगे
मात्रिः॥ ॥ ततो कोमलपुजाः॥
आचार्यदि॥ ॐ मधुरात्मनाय नमः॥
ध्यानः॥ मधुरात्मनाय नमः॥
त्रिलोचनीः शकाक्षविन्दुमुद्राचको
मरिभवतारिणीः कोमलपुष्पय
ध्यानपुष्पय नमः॥ मधुरात्मनाय नमः॥
ॐ कोमलपुष्पय नमः॥ ॐ एकापका
त्मनाय नमः॥ ॐ शक्तिरुक्ताय नमः॥
ॐ सुचरुक्ताय नमः॥ ॐ कमलपुष्पय
त्माय नमः॥ ॐ वरदरुक्ताय नमः॥
ॐ लोहितान्तराभुजाय नमः॥ ॐ इति
यने नमः॥ ॐ महिष्ये नमः॥ ॐ
कोमलपुष्पय नमः॥ ॐ वैश्वदेवे नमः॥
ॐ वासुदेवे नमः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥
ॐ चामुदेवे नमः॥ ॐ महात्मनाय
नमः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥
आचार्यनादि चन्दनाक्षतपुष्पय नमः॥
कोमलपुष्पय नमः॥ ॐ कपिलादिपंचगे
मात्रिः॥ ॥ ततो देवपात्रपुजा
जात्रादिस्तुतय इदमात्मनमः॥

पुष्पयनमः॥ॐ आवाहनादि॥ प
 द्मासनयनमः॥ ध्यात॥ॐ वसुंध
 राजावाविमर्षजन्यनिदायिनी
 पुत्रयोच्चादिमर्षाविनमामिन्मा
 परमेश्वरिध्यातपुष्पयनमः॥ॐ
 वसुंधरायनमः॥ॐ जानोद्विद
 देव्येनमः॥ॐ द्राह्मदयादि॥
 आवाहनादिचन्द्रनाक्षत्रपुष्पयन
 मः॥ जानोद्विद्विद्वद्व्यार्चनविध
 तमर्षाविधियुनमः॥॥
 ततोद्विदाविद्यापुजा॥॥ॐ ह्र
 र्यायनमः॥ॐ गह्वरायना
 यनमः॥ॐ धनुषायनमः॥ॐ
 गणायनमः॥ॐ क्षत्रपाजा
 यनमः॥ॐ ईशदेवतायेनमः॥
 ॐ नागरायनमः॥ॐ क्रैतुमं
 तयनमः॥ॐ ग्रहक्षमिनमः॥
 ॐ दुर्गायेनमः॥ॐ क्षात्रेभ्यो
 गनयिष्येभ्यो नमः॥ आवाह
 नादिचन्द्रनाक्षत्रपुष्पयनमः॥॥
 ततो हस्तकनपुजा॥॥ॐ शो
 येनमः॥ॐ दय्यनायेनमः॥ॐ
 पद्मायेनमः॥ आवाहनादिच

चन्द्रनादिक्षत्रपुष्पयनमः॥ ततो ह्रि
 त्पुजा॥॥ शिवसेनमः॥ॐ
 विष्णुवत्तभयेनमः॥ॐ पद्मा
 यिष्येनमः॥ आवाहनादिचन्द्र
 नाक्षत्रपुष्पयनमः॥॥ ततो व
 ह्मपुजा॥॥ॐ वसुंधराय
 ननमः॥ पुष्पयनमः॥ॐ वसुंध
 रायनमः॥ॐ ह्रदयादिपद्मपुजा
 आवाहनादिचन्द्रनाक्षत्रपुष्पयन
 मः॥॥ मातृकोपुजाचन्द्रनाक्षत्रपु
 ष्यनमः॥॥ॐ धूप॥॥ कल्पितेन
 सोपानानागधैस्समंशुतः॥ आ
 ग्रहेष्वर्चयेत्तानां धूपोयं प्रतिग्रहे
 तां॥॥ दीप॥॥ पुष्पकाशयोग
 रादीषं सध्वजिनिमिरापरं संध्या
 ह्याभ्यासं ह्योतिदीपोयं प्रतिगृ
 ह्यतां॥॥ प्रतिष्ठासाधनेऽर्च्येः॥
 गोवत्तभावाभासकलस्य प्रभवति
 भवतायावदाकाशजं गाः॥ याव गो
 गोमनाद्या गगणा गणायति गोपति
 वाभ्योसं॥ यावत्तन्नापि वाकोरुहि
 कं मलजयं वेद विद्वांस्तवाग्निं॥ ता

त्वपुत्रयोच्चाद्यजनपरिदृतांवर्द्ध
 तेराजलक्ष्मीसुप्रतिष्ठावदाभव
 तः॥ ॥ जपगायत्रिन॥ १२॥ ३॥
 ५४॥ १०८॥ मङ्गलपुष्पं॥ ॥
 तोत्रं कालयेत्॥ ॥ कलमया॥
 ऊलक्षोषधिमकलतिर्धर्जलन
 शुर्गोच्चकृन्नपक्षवमुक्षोभितं
 यमाजाः॥ यन्नुजानेविषयमुनि
 भिश्चप्रकृतं कृन्नमृतिविषयशक्ति
 नमामिः॥ ॥ इत्यादिपश्चात्तानं
 प्रहाराणां कवचं भवतु वाक्यजन
 मानस्य
 नामकर्णदृग्राज्ञकर्मनिभञ्ज
 क्षुप्यक्षुपदीपावर्धनविधौतत्त
 र्द्विपरिशुर्गमस्तु॥ ॥ धनजो
 सिपुजायाचकोः॥ जजमानयातके
 वलं विद्याव्रथाद्यावर्हमावर्च
 दनः जजोपवितः क्षुपः दीपः अ
 द्दमं कलपमर्वाभिद्रियं नमु॥ ॥
 धनजजमाननः स्वानवः जाकिं वः नि
 पोतविद्यकोः स्वामिरसुः पुमिरसुः
 स्वामिवाचनपरतपः
 मामनमवाहयकः मिमाधंकादि

निनः लज्जोपाहयः स्वामिचोपाव
 पतिमयः केचनचकोः धालमराह
 दयकोः मिमिरिहेवनेतयाः इलका
 पलकानजोपोलगतैः ऊपापपा
 पवस्वनिमयः सर्वपापविमोचनं
 क्षोक्षद्विंकारं निमयः एविधिदत्तं
 मेहं॥ चरवर्जिगोडजासः मततयाके
 नाववसतयः जाकिं लजनः मचापाके
 पिद्यावः मतयाको सगोडगावः मत
 देहक्षयपिद्यावसुमद्योयः जजमान
 नपुस्तिककोदनकः स्वामिद्वानभ
 र्धपाचपशुनाजजमानपानेधका
 डिआदिनलं सहायावः स्वानहुच
 केवलसु॥ ॥ धकादिआदिनवलमा
 दिपूजायाकेः चदनावेतपुष्पधूप
 दीपतयकोः मराहजदयकोः मचाध
 धकादिहेवनोः जाकिं पुष्पलतये
 स्वानतयः जाकेजोनकं तोचयायः॥
 ऊं नमः संमूर्तां कलमायः सुतिनं
 देवतानांः सकलसुलनदीतिर्धगं
 गादितीयंः पुर्गिरजोषधिभिश्च
 कृममयुतेश्च वसन्त्यसवेन॥ वि
 द्धानां धर्मसंरुकाहवाविषहंसर्व
 जसप्रसन्नः तं वदेकृन्नमस्तुमिशिव

भेतिमकलं मंगलं मंगलानां ॥ अ
 स्वस्वामा वलिद्यानरुमानो वि
 भिद्यनः क्षपः परशुरामश्च मार्क
 ण्डियतथैवच ॥ विद्युद्यराय विरा
 दविश्वरूपाय नमः ॥ सर्वविद्यु
 हरदेवसर्वशक्तिनमोस्तुते ॥ नि
 त्यानन्दपरशाननिष्कलः कानि रा
 मयाः यो मातीतयशश्चरणे भेरुवकं
 नमाभ्यरुः ॥ नमो कपिलदेवीः
 मतो हरपुजिते ॥ पापि त्रयसर्वदाधि
 पुः पुजितच नमाभ्यरु ॥ को मासि म
 यु राहृज्जरकादिः रुकावाशलिः
 सकश्चिदुमुद्राचः गृह्यश्रित
 मोस्तुते ॥ काय्याकालिडसर्विधाः
 ध्यात्वा त्वपरमेश्वरिः तन्मोक्षकं
 सिद्धोभाषं दायित्वं नमाभ्यरु
 ईशदेवनमोभ्यः कलदेवनमो न
 मः ॥ स्वानन्दवग्रहाश्च सर्वपुजाग
 रुतमोस्तुते ॥ यथावाणाप्रहरा
 कदेवभवतु वारुणतदेवविधा
 तानां ह्यग्निभवनवारुणः श्रेष्ठस्वका
 भयनाक्षिराजसुखसदंपदः ॥ वा
 को अभजंश्च पुष्यधुपदी पार्थिव
 विद्यतन्मर्षिविधियरिपुं मज्ज ॥ पु

जायाचके ॥ मण्डलसचोऽथका
 डिआदिपक्षिस्तं मण्डलसचोऽ
 द्यामन्वा मा मया तनिष्ठचकेः मण्ड
 लसचकेः जालासिधयः ॥ धनमिमा
 थकादिनिनः मतफः ताड्याः स
 गणा मिच्छुलः अजस्रजादेष्टाया
 कलशसः मचायार्कन्याचके ॥ स
 क्षिपधधे ॥ तत्रकुलधः तनंकिर्कः
 अजलंउदोः सुखायः खेवनन्याच
 चकेः आगमवोदगयाः मचानेके
 तनके मतयाः मतमहुमुवोक्वोक्षि
 कयाः कृष्यतयः ॥ म्यावोदिदिधा
 तविधाः वाक्प ॥ उँआपाताय द्या
 रा ॥ धकाले पंचवलि विद्यकाः म
 चासंचग्राह्यार्के ॥ उँप्राणाय द्या
 राः ॥ उँ व्यानाय द्यारु ॥ उँ मुदान
 य द्यारु ॥ उँ स्वमानाय द्यारु ॥ व
 लि कोने ॥ नोतिचके ॥ रुपाक्षके
 तयागुलिमतः तयावः वेपथदेव
 द्यं कालवधवातके ॥ नक्षत्रया
 पाडच्ययावः नामकुन्यावः धका
 डिनानकनकेः मिजनयाजधरु
 सपनसः मिमायावधरुसपोत
 सवाने ॥ मित्रपालागमवोऽ

अक्षिपकथः श्रवादि आदिद्यामभि
 बुधाप्रविषकोः दं १२ देवदक्षिणा
 जोषिद्यातदक्षिणा ॥ कोतनकोः ॥
 वाचनकाद्यः न्यामयानासूर्यमा
 द्विधायाः ॥ ॥ श्रवादिद्याहेव
 नेनसकनतयाः अभिष्यषविषः
 वेतसगुणामिद्य ॥ स्वानविषः जात
 कनेषिद्यासदेकायास्वानतयाः
 मानद्यामविद्य ॥ मन्वागचंनजार्क
 तिके ॥ शिफआरति ॥ श्रवादि
 काद्यय ॥ पूर्याचन्दनिभंजस्यद
 र्यनः सचुदर्याहाः इवापिषाक्षिप
 देदिनः शुभुकिषः वंजसहत्तः गो
 नकाशकादिनमवाभूर्यजपको ॥
 श्वनलिः श्रवद्विद्याभूश्चनविषके
 देदेवालेदिदिद्यागदिद्याक्षोपः ॥
 इतिनामकारिषि ॥ ॥ ॐ नम
 श्रिवायः ॥ स्वामिफार्या ॥ ॥
 स्वामिविद्वः श्रवामिमानसहेकेवच ॥
 योगिनिचालिमार्वाचः स्वामिपोष
 श्रवन्जगत्पुर्वदक्षिनश्चैव प
 श्रिमोक्षामवचः ॥ स्वामिमर्षस
 ड्गश्रः पुप्रप्रवागदेवता ॥ २ ॥ हे
 स्वामिभेदमिषाः स्वामिचाष्टादे

वताः योगिणि स्वामिब्रह्मादिभिः
 श्रवामिहृदसदाशिव ॥ ३ ॥ विनाश
 काश्चकारश्च स्वामिदिशयमपना
 ॥ स्वामिदेवताकपालाश्च स्वामि
 पुनदग्रहा ॥ ४ ॥ स्वामिनिश्चयन
 श्रवायोगानिमिशयेवच ॥ स्वामि
 दासाभिरुस्वामिः अहोरात्रवच
 सार ॥ ५ ॥ समुद्राभपर्वताश्चामि
 सप्रजोवासरिमुद्राश्चामिपश्मा
 अगर्भर्षापत्रगावसवदत्ता ॥ ६ ॥
 स्वामिवसुमामिआपः मेजवाभुश्च
 योमक ॥ ७ ॥ नवृक्षह्नाश्चामिः पु
 न्यामश्चतुर्विध ॥ ८ ॥ योगिणिस्व
 क्षिबोलेराशकुलजाश्चामि
 शा ॥ स्वामिदेवायुगश्चामिगाय
 त्रीव्याहृतिस्मा ॥ ९ ॥ स्वामि
 जाप्रजानाचः सत्त्वानामो नवेवुचा
 आचार्यमुद्रिकियापर्वामिः स्वामि
 यज्ञषट्पदा ॥ १० ॥ मंजराहृक
 येस्वामिः स्वामिदेवग्रहेवच ॥ ११ ॥
 जमानसदाश्चामिः नृपातमर्षदे
 वता ॥ १२ ॥ इतिस्वामिवाचन ॥ ॥
 ॐ श्रीमन्मंजजविद्यारोहिरुये
 वायुमहेश्वरानः श्रवामिना

अथोभास्वदिवसं प्रालम्बकं रा
 द्रगादिष्वलग्रहाऽप्रदुन्मनरेक
 वलऽसुरगजश्चिन्मोमणीकोल
 भऽमेमेसाधोधरश्चलऽकल
 धरऽकर्मनेमजाल ॥ ११ ॥ गोरि
 कोरदिनिश्चकडसुभगाऽजोति
 सुयणाश्रुभाऽसावित्रीचऽस्वर
 तिचसुरभिऽस्वपवगाकधतिऽस्व
 राजसुवतिऽसुरेयभगिनीदुःस्व
 प्रविध्मनीऽवेलाश्चाम्यनीधऽग
 समीतमजलाकर्मनेमर्कल ॥ १२ ॥
 नेत्रानां तुतयश्रुभंयसुयतेरुदि
 त्रयं पादनऽवद्यविधुपदत्रयं
 त्रीभुवनऽश्वातचराद्यत्रयं ॥ गगा
 वरुषधत्रयऽसुविमलऽवेदचीय
 विष्कतऽसंधानां त्रिनयं द्विजेरवी
 हिवावालायमद्विजऽकुजनका
 गार्गसाद्यागेतमऽ॥ माध्यानां भ
 लाधोवअधस्वोवादलीचन्दन
 तनुमराजालकल्पश्रुमाजसुनि
 नकदंसुत्रकजाललां अभ्यस्व
 यजोनलऽसर्वेतेनरुणीऽश्वताव
 रवयं विभ्राजिक्विंशजिताऽरभ्यने
 तवनधस्वतदनवनं कर्मनेमग

तं ॥ ५ ॥ श्री गौतम उवाच ॥ विष्णु मन्त्रः
शिव पाता भूमाः विचित्राणां महिम्नः
एगिरि ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ वासा दश ॥ प्रागक्षो
चरवक्ष्ये ॥ गमविलं प्रश्नार्थं शङ्करः
दर्शते गिरयश्च मन्त्रमहिता ॥ कुर्वतु मे
कृतं ॥ ६ ॥ गगानि ध्रुवकंदः क्रविः अयमना
गोदायः नर्मदा कावेरी सरजः महान्म
नयाः चर्मन्वन्ति देविकाः शिवा वेदवाते
महेश्वर उवाच ॥ नावतयाः शरद्वीः पु
ण्या पुण्ड्र जक्षेः सप्तद्रवहिता ॥ कुर्वतु मे मं
कृतं ॥ ७ ॥ गंगा गोपति गोमतिः गणपति
गोविन्द गोवर्द्धनाः गिता गोमय गोरजो गिरि
हताः गंगाधरो गोतमः ॥ गायत्री गजदेग
जगिरिषाः गन्धारी गोदावरी गंधर्वी गुरु
गोप गोकुल गना ॥ कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ वि
र्धर्धद्विषावकः सुविमलः कुम्भश्च पुणो
जले ॥ शम्भुश्च सुयश्च सुकोऽवता गोरो
चनाम्नो कलः ॥ विप्रदेद विदप्रभा नम
ये गोकाश्मिनीः श्रीहयोः दुर्धर्गः तिलगः कुजा
सदा पिता ॥ कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥ इत्यने वल
मङ्गलाष्टकमिदं ॥ पापश्च विध्वंसनं ॥ पुण्य
संप्रति कालिदास कविना दृष्टं प्रवक्ष्ये ॥
दशप्रातः ॥ शुभं शुभं शुभं शुभं शुभं ॥

